199
692 Ф
М
MICRO FILM

C. I. D. no. 5189-VIII
dated 26 october 1930
4.4

राष्ट्रीय तरंग

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED
30 MAR 1931

जिसमें

चुनिन्दा चुनिन्दा राष्ट्रीय गाने एक दफा पढ़ने ही से दिलको फड़कादेने वाली कविताओं का संग्रह।

प्रकाशत व संग्रहकर्त्ता
के० एल० बर्मन
विसेशरगंज
बनारस सिटी।

695

प्रथमावृत्ति] सन् १९३० ई० [मूल्य -)
सैकड़ा ४॥≡)

891.431
B 9271
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 692
Date 17.12.71
GOVT. OF INDIA

* वन्दे मातरम् *

राष्ट्रिय तरंग।

फिर क्या चाहते हैं

बतायें तुम्हें हम कि क्या चाहते हैं।
गुलामी से होना रिहा चाहते हैं॥
फ़कत इस ख़ता के सज़ावार हैं हम।
की दर्दे वतन की दवा चहते हैं॥
बुरा चाहते हैं जो हम बेकसों का।
हम उनका भी दिल से भला चाहते हैं॥
गरीबों को तेरा हो बस आसरा है।
निगाहें करम या खुदा चाहते हैं॥
इस उजड़े हुए गुलसने हिन्द को फिर।
हरा और फूला फला चाहते हैं॥
घड़ा पाप का गालिबन भर चुका है।
जमाने से जालिम मिटा चाहते हैं॥
वतन पर दिलोजान कुरबां को करके।
जो मर कर भी आबे बफ़ा चाहते हैं॥

कट कट के मरना होगा

आओ वीरो ! मर्द बनो, अब जेल तुम्हें भरना होगा ।
सत्याग्रह के समर क्षेत्रमें आ आ के डटना होगा ॥
शूर लड़ाके मर्दों हो, पैर हटाना कभी नहीं ।
मरते मरते माता का अब, कर्ज अदा करना होगा ॥
वक्त नहीं है ऐ वीरों, अब गाफिल होकर सोनेका ।
दौड़ चलो मैदानों में, माता का दुःख हरना होगा ॥
याद करो माता का तुमने, बहुत दूध है पान किया ।
दूध पिये की लाज बहादुर, किसी तरह रखना होगा ॥
शेर मर्द हो बीर बांकुड़ा, याद करो कर्तव्यों का ।
मातृ वेदी पर हँसते २ कट २ के मरना होगा ॥

काकोरी के शहीद

थे जंगे आज़ादी में काकोरी के शहीद ।
फांसी पे गये झूल वो काकोरी के शहीद ॥
चलती वो ट्रेनमें था सरकारी खज़ाना ।
बीरो में दिलावर थे वो काकोरी के शहीद ॥
नाना धूधू पंथ का खाका लिया था खीज ।
देते थे डाका ट्रेन में काकोरी के शहीद ॥
शहे जहांपूर रहते थे असफाक उल्लाखां ।
विशमील राम प्रसाद थे काकोरी के सहीद ॥
काशी के जीतेन्द्र लाहीड़ी और बकशी जी भी थे ।
धोके से पकड़े गये वो काकोरी के शहीद ॥

आजादी के दिवाने थे वो शेरे दिल मज़बूत ।
करते थे काम जोरो में काकोरी के शहीद ॥
वतन के नव यूवको से करते थे वे अपील ।
होते है रूकस्त वतनसे काकोरी के सहीद ॥

गजल

ऐ यारो खेल समझते हैं हम जेल में आने जाने को ।
जानें हैं हमारी नज़रे वतन निकली है नज़र चढ़ाने को ॥
हम अपने वतन के सेवक हैं हम अपनी क़ौम के ख़ादिम है ।
बच्चों का खेल समझते हैं हम मरने को मिट जाने को ॥
बेजुर्म ख़ता अँगरेजों ने शेरों को हमारे पकड़ा है ।
सौदा ये हमें भी भाया है जायेंगे जेल बसाने को ॥
ये कैसी हुकूमत है यारो अल्लाह का कहरो ग़ज़ब इसपर ।
हम लाखों मन ग़ल्ले के मालिक मुहताज हैं दाने दाने को ॥

गरीबों की आह

गरीबों को जालिम तू कितना सता ले ।
न अरमां रहे दिल की हसरत मिटा ले ॥
छिपेगा न हरगिज तेरा फन्द कातिल ।
ऐबों को अपने तू कितना छिपा ले ॥
गरीबों की आहें न जावेंगी खाली ।
जला देगी यूरुप को अपने बचा ले ॥
गये हाथ खाली वो कंसादि रावण ।
तू तो जमीं लेकिन सर पे उठा ले ॥

जन्नत में असुरों का क्या जोर ज़ालिम !
ये दोज़ख में अपने तू विस्तर लगा ले ॥
ये बमलट को तुझसे हुई सख्त नफ़रत ।
न मानेंगे हम तू ये कितना मना ले ॥

गजल

निकालो थोड़ा सा वक्त अपना,
चलाओ चर्ख़ा चलाओ चर्ख़ा ।
जो और थोड़ा सा वक्त पाओ,
तो बीनो कपड़ा चलाओ चर्ख़ा ॥
जो चाहते हो निजात अपनी,
तो पहनो अपने गले में कफ़नी ।
उठो करो देश की भलाई,
जो सीखे उसको सिखाओ चर्ख़ा ॥
डरें न योरप के गन से दम भर,
पुकार दो आज जाके घर-घर ।
मशीनगन जो तुम्हें दिखाये,
उसे तुम अपना दिखाओ चर्ख़ा ॥
यह विष्णु का चक्र है सुदर्शन,
कभी न इसको ज़लील समझो ।
जो चर्ख़ें इक़बाल पर हो जाना,
तो पहले घर में चलाओ चर्ख़ा ॥
पड़ा है योरप में ज़लज़ला सा,

कि हाय सारा तिलिस्म टूटा।
यह किसने कानों में आके फूँका,
ज़ुबाँ को रोको चलाओ चर्ख़ा॥
अगर गुलामी से छूटना हो,
स्वराज की दिल में हो तमन्ना।
तो खाके मोटा पहन के खद्दर,
घरों में बैठे चलाओ चर्ख़ा॥
सुना है दाना भी घर में बैठे,
चलाया करते हैं अपना चर्ख़ा।
तो तुमको अब उज्र क्या है बाक़ी,
बस आओ २ चलाओ चर्ख़ा॥

देश-भक्त का प्रलाप

हमारा हक़ है, हमारी दौलत, किसी के बाबा का ज़र नहीं है।
है मुल्क भारत वतन हमारा, किसी के ख़ाला का घर नहीं है॥
हमारी आत्मा अजर-अमर है, निसार तन-मन स्वदेश पर है।
हैं चीज़ क्या जेलो गन मशीनें, क़ज़ा का भी हमको डर नहीं है॥
व देश का जिसमें प्रेम होवे, दुखो के दुख से जो दिल न रोवे।
ख़ुशामदी बनके शान खोवे, वो ख़र है, हरगिज बशर नहीं है॥
हुक़ूक़ अपने को चाहते हैं, न कुछ किसी का बिगाड़ते हैं।
तुझे तो ऐ ख़ुदग़रज, किसी की भलाई मद्दे-नज़र नहीं है॥
हमारी नस-नस का खून तूने, बड़ी सफ़ाई के साथ चूसा।
है कौन-सी तेरी पालसी वह कि जिसमें घोला ज़हर नहीं है॥

बहाया तने है खूँ उसी का, है तेरे रग-रग में अन्न जिसका।
बता दे बेदर्द, तू हो हक़ से, सितम है ये या क़हर नहीं है॥
जो बेगुनाहों को है सताता, कभी न वह सुख से बैठ पाता।
बड़े-बड़े मिट गए सितमगर, क्या इसकी तुझको ख़बर नहीं है॥
सँभल-सँभल अब भी ओ लुटेरे, है तेरे पापों का अंत आया।
कि ज़ुल्म करने में तूने ज़ालिम, ज़रा भी रक्खो कसर नहीं है॥
ग़ज़ब है हम बेकसों की आहें, तझको आसमाँ हिला दें।
ग़लत है सझे 'कमल' जो समझे कि आह में कुछ असर नहीं है॥

नौकरशाही को चेतावती

ग़ज़ल

तुम्हें सुझी हैं क्या नहीं बताते हो क्यों०—
भारती होकर ज़ुल्म भारत पै किये जाते हो।
सिरोफ पेट के लिये ये पाप क्यों कमाते हो॥
भारत माता के लाल होके क्यों रुलाते हो।
भारती के नाम को बट्टा ये क्यों लगाते हो॥
देश द्रोही अब तुम कहाते हो क्यों।
तुम्हें सुझी हैं क्या नहीं बताते हो क्यों०—
हिन्दु वीरों ने नि-शस्त्रों पै शस्त्र कब चलाया है।
तुम्हारा दोष क्या सोहबत का असर आया है॥
डायर ने आन कर ही ये पाठ सब पढ़ाया है।
नित धर्म शास्त्र सब आप का भूलाया॥
उनकी चालों पै नहीं ध्यान लाते हो क्यों।

तुम्हें सुझी हैं क्या नहीं बताते हो क्यों०—

डायर तो था यूरप का वो यूरप चला गया।
अपनी देश भक्ती वो तुमको दिखा गया॥
चेतो नौकरशाही अब वो वक्त आ गया।
घर २ में देश भक्तो का कोहराम छा गया॥

अपने हाथों से घर अपना ढाते हो क्यों।
तुम्हें सुझी हैं क्या नहीं बताते हो क्यों०—

मिटाके हमको क्या लन्दन को आप जावोगे।
या ईंट रोड़ों पै हुकूमत को तुम चलाओगे॥
ख़ैर परवाह नहीं जो कुछ भी ज़ुल्म ढाओगे।
हमें तो अहिंसा धर्म पै आरूढ़ आप पाओगे॥

धर्म अपना ये लेकिन डुबाते हो क्यों।
तुम्हें सुझी हैं क्या नहीं बताते हो क्यों०—

ज़िन्होंके वास्ते तुम बहाते लहू की धारा है।
आखीर तक न वो साथ दे सके तुम्हारा है॥
जर्मन की लड़ाई में खुला उनका भेद सारा है।
आखिर भारतसे ही होता आपका गुजारा है॥

नहीं क्यों अबहीं से रस्ता बैठाते हो क्यों।
तुम्हें सुझी हैं क्या नहीं बताते हो क्यों०—

मा बाप आप के ये जो जानते अगर।
होवेगे देश द्रोही हमारे जो ये पिसर॥
दे करके ज़हर तुमको सब कर लेते वो सबर ।

लेकिन भविष्य की नहीं होती है कुछ ख़बर॥

नाम पुरखों का अपने डुबाते हो क्यों।
तुम्हें सुझी हैं क्या नहीं बताते हो क्यों०—
आखिर सवाल आपका लो पेट का जो आया है।
वो क्या देगा नहीं जिससे शरीर पाया है॥
जन्म से पेश्तर स्तन में दूध जब पहुँचाया है।
अब क्या भूखा रक्खे वो उसकी अजब माया है॥
सिख बमलट की दिल में नहीं लाते हो क्यों।
तुम्हें सुझी हैं क्या नहीं बताते हो क्यों०—

गजल

अब तो चर्खे पर बन्दर नचाये जायेंगे।
तकली प्यूनी से लंडन भगाये जायेंगे॥
लंडन की बनी मखमली सारी व लंकलाट।
साटन गिरंट डोरियों का कर दो बायकाट॥
कपड़े सारे विदेशी जलाये जायेंगे॥
बंडी के लिये छींट न हर्गिज रँगाओ तुम।
उसकी जगह पै शुद्ध खद्दर ही मगाओ तुम॥
अब तो भारत के पैसे बचाये जायेंगे॥

सच्चे सुधारक हो

हमें वल्लभ की चालें मुबारक हो।
गावों में जावें अड्डा जमावें, शिक्षा सफाई प्रचारक हो॥हमें—
आदर अनादर किसी दर न देख, कादरपनेके बिदारक हो॥हमें—
अन्यायों को निर्भय कुचल दे, हलचल मचा उद्धारक हो॥हमें—
आलस विलासी की बू तक न होवे, बच्चे भी सच्चे सुधारक हो॥

वकीलो अब आना पड़ेगा

वकीलो तुम्हें भी अब आना पड़ेगा।
वकालत को अब तो हटाना पड़ेगा॥ वकीलो—
गये जेल में सब नेता हमारे।
जगह पे तुम्हें उनके आना पड़ेगा॥ वकीलो—
छिड़ा जो अहिंसात्मक युद्ध भारि।
तुम्हें नेता बनकर जिताना पड़ेगा॥ वकीलो—
आलस में पड़े वीर सोये हुए हैं।
उन्हें अब तो तुमको जगाना पड़ेगा॥ वकीलो—
गुलामी से भारत को आजाद करके।
इन लोगों से बदला चुकाना पड़ेगा॥ वकीलो—
दिहातों में जाकार सभायें को करके।
स्वयंसेवक सब को बनाना पड़ेगा॥ वकीलो—
जो मालो वो दौलत लन्दन गये हैं।
उन्हें अब तो फिर से मंगाना पड़ेगा॥ वकीलो—
टिकस चौकीदारी जो देते हो "त्रिभुवन"।
उसे बन्द तुमको कराना पड़ेगा॥ वकीलो—

हमारा इरादा

हुये तुमको अब हम भगाने के काबिल।
है यूरप की हस्ती मिटाने के काबिल॥
जो डायर ने कीने जुलुम थे यहां पर।
है हाहिर ये बदला चुकाने के काबिल॥

ये देखेंगे हम भी दमन चक्र तेरा।
यहां लाखों हैं गरदन कटाने के काबिल॥
पकड़ने से उनके रुके क्यों आन्दोलन।
हैं हर एक लीडर बनाने के काबिल॥
हुआ आब दाना ख़तम यहां तुम्हारा।
अब बातों में भारत न आने के काबिल॥
मिले गरचे हमको इसारा ज़रा सा।
दिखावें वो हिम्मत दिखाने के काबिल॥
जेहलखानों की देखो बनी धर्म शाला।
ये अच्छा मुसाफिर टिकाने के काबिल॥
पै मालों पै अपने करो ख्याल जालिम।
अब बमलट नहीं हैंगे गाने के काबिल॥

देख लेना

हमारे शबर का असर देख लेना।
क्या ढायेंगे तुम पै कहर देख लेना॥
ओ मानचेस्टर की जरैंगी मशीनें।
ये चर्खे का उस दम हुनर देख लेना॥
ये भगना पड़ेगा तुम्हें हिन्द तज कर।
भगने को अपनी डगर देख लेना॥
ये ब्याज में लेवेंगे यूरुप तुम्हारा।
रहने को अपने ये घर देख लेना॥

शहीदों की आहों से कहरे इलाही।
तुम पीने का पानी ज़हर देख लेना॥

गजल

रंग क्या आखिर जहां में हम जमा सकते नहीं।
नकश बातिल दिल से क्या हम मिटा सकते नहीं॥
बाग वानो ने चमन क्यों चुप है क्यों खामोश है।
गुलिस्ताने हिन्द को क्या लहलहा सकते नहीं॥
खौफ कुछ सैय्याद का बिजली का कुछ डर बरना ये।
बुलबुले हिन्दोस्तां क्या चहचहा सकते नहीं॥
जो रुकावट अपनी आजादी में होती है मुदाम।
हम अगर चाहे तो क्या उसको मिटा सकते नहीं॥
सो लये जौरो सितम अब एक चिरागें सुबह है।
झिल मिलाती समा को क्या हम बुझा सकते नहीं॥
हम मनायेगें खुशामद से उठा ले आयेंगे।
वो न हम तक आये तो क्या हम भी जा सकते नहीं॥
इसके क्या माने की दावाये वकुवत भी करे।
अपने रूठे भाईयों तक को मना सकते नहीं॥

बन्दर भगाये जायेंगे

अब तो जेलोंमें तसले बजाये जायेंगे।
इसी चर्खेसे बन्दर भगाये जायेंगे॥
गर तुम्हें रहना है हिन्दुस्तानमें सुन लीजिये।
जो हमारी है हुकूमत हमको वापस दीजिये॥

वरना शेखी औ शान मिटाये जायँगे।
इसी चर्खेसे बन्दर भगाये जायँगे॥
लाखोंकी तादादमें तुम जेलोंमें भर दो हमें।
छोड़ सकते हम नहीं जिस कार्यपर हैंगे जमें॥
जेल देनेसे क्या हम डराये जायँगे।
अब तो जेलोंमें तसले बजाये जायँगे॥
हैं नहीं दुनियांमें लाला लाजपत और लोकमान।
तो हुआ क्या देखो अब दिनदिन बढ़े भारतकी शान॥
गुजरी बातोंकी याद दिलाये जायँगे।
इसी चर्खेसे बन्दर भगाये जायँगे॥
पहनो खद्दर भाइयों विदेशीको त्यागन करो।
खादी लेकर पेट अपने देश वालोंका भरो॥
अपने देशके रुपये बचाए जायँगे।
अब तो जेलोंमें तसले बजाए जायँगे॥
मानना न मानना अब आपके अखत्यार है।
आपके करमों से तो भारत बहुत बेजार है।
भग्गू खद्दर का चलन कराए जायँगे।
इसी चर्खेसे बन्दर भगाये जायँगे॥

सत्य बाणी

हमारे खूँ से बने हैं गोरे, हमीको काला बता रहे हैं।
ये लूट कर मालो जर हमारा, हमीको जालिम सता रहे हैं॥
हमारे पैसे से फौज पलटन हमारे पैसे से हैं हकूमेते।

हमी से पैसा वसूल करके अँगूलीयो पे नचा रहे है ॥
जिधर वो चहे चलावे डडे जीधर वो चाहे चलावे गोली ।
हिन्द के ये पुलिश वाले प्रजा को नाहक सता रहे है ॥
गुलामी से देख हिन्द जकड़ा, बजाया मोहन ने शंख आला ।
जो लाल भारत के सो रहे थे, उन्हें वो अब तो जगा रहे हैं ॥
कुछ भी दिल में रहम तो लाओ, सताना अच्छा न बेकसोंको ।
तु क्यों न खाता है खौफ उनका, जो सारी दुनियाँ चला रहे हैं॥
जो तुम चलाओगे गन मशीनें, तो हम भी सीना अड़ाय देंगे ।
भगायेंगे हम तुम्हें भी लंदन, ये सत्य बानी सुना रहे हैं ॥
बनायेंगे हम अनेकों जंगी, अनोखे ये जंग मचा मचा कर ।
निशस्त्र होकर भी "भीम" ऐसा, दे गर्जना कर घुमा रहा है ॥

गजल

शहर बलीया में गोली चलाई गई ।
अत्याचार की धूम माचाई गई ॥
सन् तीस चार अगस्त का, यह हाल है सुन लिजिए ।
महावीर दल जलूस है अब इसको जाने दिजिए ॥
दफा एकसौ चवालीस लगाई गई ॥ १ ॥
आम पब्लीक में हुवा बस शोर इस कानून का ।
चढ़ रहा था पाप उन पै बेकसों के खून का ॥
शान्त प्रजा पै लाठी चलाई गई ॥ २ ॥
जारही थी भीड़ भारी राष्ट्रीय झंडा लिए ।
उस ओर था शैतान का दल हाथ में डंडा लिए ॥

पुलिश वालो से लाठी पिटाई गई ॥ ३॥
हिन्द के बासी कलेक्टर और हीन्दू जात है।
अपने स्वार्थ के लिए कैसा किया उत्पात है॥
शर्म उनको जरा भी न आई गई ॥ ४॥
ईश तू पैदा न कर अब हिन्द में ऐसे वशर।
जो कलंकीत कर रहे हैं मातृ भूमि को निडर॥
इज्जत भारत का खाक मिलाई गई ॥ ५॥
देखकर करतूत इनकी डायर की भूली याद है।
ये न कहने को रहा कि वीदेशी ही जल्लाद है॥
खून पव्लीक से प्यास बुझाई गई ॥ ६॥
सैकड़ो घायल पड़े हैं गोलियों की मारसे।
आशमा तक दिल उठा जालिम के अत्याचारसे॥
माता बहनो की इज्जत लुटाई गई ॥ ७॥
शान्ति के हम है पुजारी शान्त रहना जानते।
शिस गर कट जाय तो बलीदान अपना मानते॥
कैसी भारत में हलचल मचाई गई ॥ ८॥
देवीयां तक कैद हुई जालिम के अत्याचार से।
आर्य्य गंगा सिंह हैं घायल गोलियों की मार से॥
कितनी गोली ये इनपर चलाई गई ।९॥

* समाप्त *

जे० पी० अरोड़ा द्वारा—
'लक्ष्मी-प्रेस' नीलकण्ठ, बनारस में मुद्रित ।